International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 07-09

ज्ञान चतुर्वेदी के साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य

डॉ0 राम कवार

पंजीकरण संख्याः 99-DEPG-196, एम0 डी0 यू0 रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक दो दशकों में हिन्दी साहित्य की व्यंग्य लेखन परंपरा में ज्ञान चतुर्वेदी का प्रमुख स्थान है। पेशे से हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ0 ज्ञान चतुर्वेदी अपने विस्तृत ज्ञान के कारण मानव जीवन के प्रत्येक विकृत पक्ष पर अपनी व्यंग्य–लेखनी के माध्यम से पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। उनके जीवन के संघर्ष ने मानव जीवन के सामाजिक, धार्मिक,, शैक्षणिक पक्ष के साथ–साथ भारतीय राजनीति के खोखले आदर्शों का पर्दाफाश किया है।

'राजनीति' शब्द 'राज' और 'नीति' के मेल से बना है जिसका अर्थ है राज्य को सफलता पूर्वक चलाने की नीति। परंतु राजनीति शब्द के इस अर्थ पर यदि वर्तमान भारतीय परिपेक्ष्य के संदर्भ में विचार किया जाए तो यह सर्वथा विपरीत प्रतीत होता है। वर्तमान भारतीय राजनीति में अत्यधिक बुराइयाँ व्याप्त हो गयी हैं जिनके कारण राजनीति शब्द का प्रयोग लाक्षणिक अर्थों में प्रयुक्त होने लग गया है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध कठोर संघर्ष से मिली भारत देश की स्वतंत्रता वर्तमान भारतीय राजनीति और राजनेताओं की अमानवीय रणनीतियों का शिकार हो गयी। श्री सुदर्शन मजीठिया के शब्दों में, ''राजनीतिक नेताओं ने सारे देश की लुटिया डुबो रखी है। यदि भारत के समस्त नेताओं को कहीं एक्सपोर्ट कर दिया जाए तो भारत की समस्त समस्या एक ही दिन और रात में सुलझ जाएगी और भावात्मक एकता का विकास होगा सो अलग।''[1]

वर्तमान भारतीय राजनेताओं के चरित्र एवं कार्यकर्ताओं पर दृष्टिपात किया जाए तो व्यंग्यकार सुदर्शन मजीठिया का उपर्युक्त कथन उचित प्रतीत होता है। ज्ञान चतुर्वेदी जी की स्पष्ट धारणा है कि यदि प्रजातंत्र शासन प्रणाली को सफल बनाना है तो इसके लिए भारतीय चुनावों का निष्पक्ष होना अनिवार्य है। साथ ही स्थायी सरकार का बनना भी देश हित में होगा। बार–बार चुनावी प्रक्रिया से सामान्य जनता को अनेक दुख झेलने पड़ते हैं। आलोच्य व्यंग्यकार ने अपने निबंध 'राजनीति और कबूतर के अण्डे में आम आदमी के प्रतीत 'कबूतर' के द्वारा व्यथा प्रकट की है – ''बाप का युग बीत गया, जब कबूतर मंत्री के बंगले में एक घोंसला बनाकर वर्षों के लिए निश्चिंत हो जाया करते थे। अब मंत्री के घर में घोंसला बनाना खतरनाक हो गया है।''[2]

उपर्युक्त प्रसंग में सामान्य जन के प्रतीक 'कबूतर' की चिंता का कारण सरकार की अस्थिरता है। वर्तमान भारत में अधिकतर राज्यों और केन्द्र में सरकार गठबंधन पर आधारित रहती आई है। गठबंधन के आधार पर सरकार चला रहे राजनीतिक दलों के अध्यक्षों के समक्ष एक प्रबल चुनौती है कि आगामी पाँच वर्षो। तक सरकार को टूटने से कैसे बचाया जाए। वर्तमान सरकार के प्रधानमंत्रियों और मुख्यमंत्रियों तक को अपना पद स्थायी नहीं लगता। 'लोकतंत्र में छापामारी' निबंध में ज्ञान चतुर्वेदी जी ने किसी राज्य के मुख्यमंत्री के पद के परिवर्तन को दर्शाया है। अद्भुत स्थिति है कि मुख्यमंत्री महोदय टायलेट और वापस आए तो कुर्सी पर कोई अन्य व्यक्ति मुख्यमंत्री के रूप में बैठा मिला। एक दृश्य द्रष्टव्य है –

''आप कुर्सी से उठे ही क्यों यार ...?''

''मुझे क्या पता था कि इतनी–सी देर में ....'' मुख्यमंत्री अपराध बोध स्वर में बोला।

''जब आपको पता था कि ऐसी राजनीतिक अस्थिरता का माहौल चल रहा है ....''

''मुझे पेशाब की लगी थी....''

''रोकते....''

''कब तक रोकता?''

''हमारे पूर्वज तो साँस तक रोक लेते थे। घण्टो ''प्राणायाम'' करते थे। भारतीय संस्कृति और परंपरा की बातें तो बहुत करते हैं आप? पर थोड़ी–सी पेशाब तक नहीं रोक पाते....। हाईकमान ने फटकारा।''[3]

सचमुच वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता भारत देश की आर्थिक उन्नति के लिए एक अभिशाप बन गयी है। यह भी सत्य है कि वर्तमान प्रजातंत्र में मंत्री पद की कुर्सी पाने के लिए होने वाले विवाद में परस्पर संबंध रिश्ते–नाते सभी पीछे छूट जाते हैं तथा मंत्री पद पाने की प्रमुखता ही सर्वोपरि होती है। कुर्सी पाने के इस कार्य के लिए वह किसी भी सीमा तक जाकर कोई भी घृणित कार्य कर सकता है। विपरीत विचारधारा वाले नेताओं को अपने दल में सम्मिलित कर सकता है अथवा धन के बल पर किसी भी विधायक या सांसद को खरीद सकता है। चतुर्वेदी जी ने ''विष, यह राजनीति'' नामक लेख में एक लेख में एक पात्रा 'वारिणी' के द्वारा कहा है – ''राजनीति में रहकर कब तक बैर करोगे विक्षिप्तों से? विक्षिप्तों के बूत ही तो राजनीति है।''[4]

वर्तमान भारतीय राजनीति का विगत कुछ वर्षों से जो स्वरूप हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है, उसको दृष्टिगत करते हुए ज्ञान चतुर्वेदी जी का उपर्युक्त वचन असत्य प्रतीत नहीं होता। राजनीति में कोई व्यक्ति अपना नहीं होता। सबको अपने–अपने स्वार्थ प्रिय होते हैं। सभी कुर्सी पाने की लालसा रखते हैं, चाहे वह किसी भी तरह प्राप्त हो। 'लोकतंत्र में छापामारी' निबंध में विधायकों की खरीद–फरोख्त पर करारा व्यंग्य किया है –

''अब आदमी किस पर भरोसा करे....बताइए। रामदयाली जी खास अपने आदमी थे....'' मुख्यमंत्री वास्तव में रुआंसा हो आया।

अपने आदमी, अपने आदमी बके जा रहे हो यार तुम...। इस राजनीति में कौन किसका आदमी है? तुम भूल रहे हो कि तुमने यह कुर्सी कैसे पायी थी? याद करो। याद आया कि नहीं। याद करो कि जब पिछला मुख्यमंत्री बाल कटाने गया हुआ था तो रामदयाल जी को पुटियाकर कैसे तुम कुर्सी पर बैठ गए थे।''[5]

सचमुच वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता से सामान्यजन अत्यंत दुखी और विवश है। राजनीतिक अस्थिरता की इस उलझी पहेली पर उसका कोई वश नहीं चलता। वर्तमान राजनीति समाज सुधार को लेकर उदासीन है। वर्तमान राजनेता कुर्सी पाने के लिए अत्यंत पाखण्डी और निर्लज्ज हो गया है। कोई भी निकृष्ट और हीन कार्य उससे अछूता नहीं है। वह गुण्डे बदमाशों से मिलकर वह अपनी कुर्सी पाना चाहता है। आतंकवाद पर छह कुत्ता कथाएँ नामक निबंध में आलोच्च व्यंग्यकार ने आतंकवादियों द्वारा मारे गए लोगों

को देखकर आतंकवादियों के विरूद्ध टिप्पणी करने से पहले वर्तमान नेता की आतंकवादियों से मिलीभगत पर व्यंग्य किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है – ''यह क्या ब्यान दे डाला आपने? मालिक के लिए चिंतित कुत्ते ने पूछा। ''कौन–सा ब्यान?'' उन्होंने कुटिल मुस्कान के साथ कुत्ते से पूछा। ''यही जो आज के समाचार–पत्रों में छपा है। इस तरह तो आप आतंकवादियों की हिट लिस्ट में आ जाएँगे। वे आपको मार देंगे तो हम लोगों का क्या होगा? कुत्ता अभी भी चिंतित था।

वे हँसने लगे।

फिर बोले – 'तुम कब से मेरे साथ हो?'

'जब मैं एक छोटा–सा पिल्ला था' कुत्ते ने कहा

वे बोले– ''और तुम पिल्ले ही रहे। वैसे भी तुम लोग क्या जानो राजनीति और क्या समझो इसके पेंच। मैं मूर्ख नहीं हूँ जो ऐसा ब्यान यूँ ही देता। मैंने कल ही यह ब्यान उन लोगों को दिखाकर उनकी अनुमति ले ली थी। कुत्ता समझा नहीं कुछ भी, क्योंकि कुत्तों में राजनीतिज्ञ नहीं होते।''[6]

उपर्युक्त उदाहरण वर्तमान राजनीतिज्ञों की तुच्छ मानसिकता और गुण्ड़ों–आतंकियों से मिलीभगत पर करारा व्यंग्य है। इस प्रकार के दुष्ट नेताओं के दोहरे दुष्चरित्र के कारण देश किसी भी रूप में सुरक्षित नहीं है। वे बदमाश–गुण्डे नेताओं के कहने पर विरोधी नेताओं को जान से मारने, मतदाताओं को अपने पक्ष में वोट डालने के लिए धमकाने के अनेक दुष्कार्य करते हैं। ''राजनीति में करीम भाई' निबंध में वर्तमान नेताओं की इसी दुष्प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है।

''इन समस्त कार्यों के लिए उसे करीम भाई जैसे कर्मठों की आवश्यकता पड़ती है जो विरोधियों को ठिकाने लगा सके। बदमाश अधम वोटरों को धमका सके तथा समाज सेवा के कठिन व्रत के लिए आवश्यक काले धल का फलाहार जुटा सके। देश सेवा के लिए पार्टी देश पर ही डकैती डालने को तैयार हैं ··· आज राष्ट्र को करीम भाई जैसे कर्तव्यनिष्ठ चाकूबाज की परम आवश्यकता है। स्चमुच ये बाहुबली नेता, गुण्डे–बदमाश सरकार और कानून तक का भय अनुभव नहीं करते। भयमुक्त होकर सरेआम आपराधिक तथा अनैतिक कार्यों को अंजाम देते हैं। वे दिन दहाड़े मद्यपान करके अपने सभी गलत कार्यों को बखूबी अंजाम देते हैं। बाहुबली और गुण्डे नेताओं के दुष्कार्यों में उनके चापलूस कार्यकर्ता भी कम उत्तरदायी नहीं है, वे चापलूस कार्यकर्ता इन कार्यों में नेताओं की हाँ में हाँ मिलाते हैं तथा उनका खुलकर समर्थन भी करते हैं। चतुर्वेदी जी ने इन चापलूस कार्यकर्ताओं को कुत्तों की संज्ञा दी है। 'राजनीति, कुत्ते, चुनाव और मुख्यमंत्री जी' नामक निबंध का एक उदाहरण द्रष्टव्य है

''कुत्तों ने यह भी देखा था कि उनके नेताओं के चारों ओर छुटभैयों, युवा लौंडों, लौंडेनुमा नेताओं की एक भारी फौज तैयार हो रही थी, जो कुत्तों को पीछे करके स्वयं ही भौं–भौं जैसा शोर करके अपने नेता की जय–जयकार करती थी। दुम न होते हुए भी अपने नेता के सामने इन दोनों कुत्तों से भी अच्छी दुम हिलाना ये सब जानते थे।''[8]

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि चुनाव में विजित एक नेता के चारों ओर चाटुकारों की एक भारी भीड़ जमा रहती है। परन्तु कुछ कार्यकर्ता भी भ्रष्ट नेताओं की आँखों में धूल झोंक कर अपनी कार्यसिद्धि को सर्वोपरि मानते हैं। ऐसे कार्यकर्ताओं को चतुर्वेदी जी ने 'भक्त' कहकर 'भक्ति मार्ग में सनसनी' निबंध में व्यंग्य किया है।

''बात वहाँ जटिल होती है कि जहाँ वे 'भक्त' जो उनके भक्त थे, वे ही रात में 'इनके' मन्दिर के पीछे से घुस कर प्रसाद चढ़ाते थे। बुदबुदा कर भजन गाते और परिक्रमा लगाते देखे गये। गिचपिच का फायदा उठाकर समझदार भक्त एक देवता के भजन गा रहे हैं, दूसरे की परिक्रमा कर रहे हैं, तीसरे का शंख बजा रहे हैं और चौथे को साध रहे हैं। इष्ट देवता नहीं वरदान है, जो भी दे जाएं। भक्तों की नजर फल पर है देवता जाएं भाड़ में।''[9]

इस प्रकार स्पष्ट है कि कुछ चाटुकारों का एकमात्र लक्ष्य स्वार्थसिद्धि है। नेताओं के भ्रष्ट और पतित चरित्र ने उनके चापलूसों पर भी कुप्रभाव डाला है। 'मरीचिका' नामक उपन्यास में वर्तमान भारतीय नेता का प्रतीक पतित चरित्र वाला सोमपाद नामक मंत्री के विषय में एक कथन द्रष्टव्य है –

''सुरा, सुंदरी एवं सत्ता के इन चौदह वर्षों की मानों सम्पूर्ण कथा ही तो उनके तन पर अंकित है। अनगिनत अत्याचार किए हैं, उन्होंने अपने तन पर। परंतु ये अत्याचार इतने मीठे हैं कि तजे ही नहीं जाते। न सुरा त्यागी जाती है, न सुंदरी। पुनः सत्ता तजने की जो कल्पना तक नहीं कर पाते, वे सुरा सुंदरी एवं अन्य उपादान इसी सत्ता के बल पर ही तो हैं।''[10]

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि वर्तमान नेता सुरा, सुंदरी और सत्ता के मद में इतना अधिक अंधा हो गया है कि उसे ऐश्वर्य के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु और कार्य नजर नहीं आता। इन सुख सुविधाओं के लिए वह दूसरों से बेईमानी करने को तत्पर है। वर्तमान नेताओं की धन लोलुप वृत्ति भी व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी जी की पैनी व्यंग्य दृष्टि से बच नहीं पाई है। 'ईमानदारी के विरूद्ध' नामक निबंध का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

''क्या हो गया है लोगों को? ईमानदारी ही करनी होती तो कोई राजनीति में क्यों आता? बीहड़ में उतरकर डकैती से परहेज। चरखे पर नाटक करने में समय खराब किया तथा रघुपति राघव राजा राम को कंठस्थ किया – क्या ईमानदारी के लिए किया? ईमानदारी ही करनी थी तो मास्टरी क्यों छोड़ते? अब गाँधी टोपी लगवाकर भी ईमानदारी करवाओगे क्या हमसे?''[11]

इस प्रकार वर्तमान राजनेता ईमानदारी से बहुत दूर हो गया है। कुर्सी पर बने रहने के लिए और मतदाताओं का ध्यान अपनी ओर बनाए रखने के लिए दिखावटी एवं झूठी देशभक्ति का प्रदर्शन करता है। विशेष अवसरों पर जैसे पंद्रह अगस्त, गणतंत्र दिवस, गाँधी जयन्ती अथवा चुनाव के दिनों में वह आज की महानता का बखान करता है परंतु वास्तव में देशभक्ति से उनका कोई लेना देना नहीं है। 'देशभक्ति' नामक निबंध में व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी जी ने इसका व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। 'घोटालों के अवसर अनंत' नामक निबंध में वर्तमान नेता की चिंता का हास्य–व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। एक नेता इस बात को लेकर चिंतित है कि अब वह कौन सा घोटाला करे क्योंकि सभी घोटाले तो हो चुके हैं। उनके लिए करने को कोई भी घोटाला अब शेष नहीं रह गया है। 'विष यह राजनीति' नामक निबंध में व्यंग्यकार ने नाट्यशैली में राजनीति के विभिन्न पक्षों जैसे रिश्वतखोरी, वर्तमान नेताओं की दुर्बलताएँ, नेताओं द्वारा सामान्य जनता को मूर्ख बनाना, विरोधी नेताओं के पुराने रहस्य खोलने की धमकी देना, सरकार से समर्थन वापिस लेना आदि पर करारे व्यंग्य किये हैं। 'नरक यात्रा' उपन्यास वास्तव में डॉ0 ज्ञान चतुर्वेदी जी द्वारा वर्तमान चिकित्सकीय प्रणाली का लेखाजोखा है। 'एक कम्युनिस्ट आंदोलन यह भी' नामक निबंध में नेताओं के द्वारा निजी स्वार्थों के लिए पार्टी में सम्मिलित होने के साथ–साथ उनके व्याप्त नशाखोरी जैसी दुष्प्रवृत्तियों पर व्यंग्य किये हैं।

अतः निष्कर्षस्वरूप कहा जा सकता है कि आलोच्य–व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी जी वर्तमान राजनीति के क्षेत्र में आई विकृतियों की गहरी समझ एवम् पहचान रखते हैं। स्वतंत्रता के समय स्वतंत्र भारत को लेकर संजोए गए सपनों के खण्डित होने में व्यंग्यकार ने स्वातंत्र्योत्तर राजनीति एवं राजनेताओं को ही दोषी ठहराया है। वर्तमान भारत में भी अंग्रेजों की कार्यप्रणाली का वैचारिक एवं व्यावहारिक अनुकरण करने वाले नेता अपनी गहरी पैठ बनाए हुए हैं। समाज का अपराधी तत्त्व भारतीय राजनीति की कुर्सी पर

जमकर बैठा हुआ है। वह वर्ग किसी भी अवस्था में उस कुर्सी एवं पद को छोड़ना नहीं चाहता। आलोच्य–व्यंग्यकार वर्तमान राजनीति में आई दुर्बलताओं का मुख्य केंद्रबिन्दु एवम् कारण राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को ही मानते हैं। यह सर्वथा सत्य पक्ष है कि जब–जब राष्ट्रीय राजनीति के प्रदूषण से कोई राष्ट्र प्रदूषित होता है तब–तब राष्ट्रीय एकता का ह्रास होता है। राष्ट्र पतन की ओर उन्मुख होता है। साथ ही व्यंग्यकार को यह भी आशा है कि वह उज्ज्वल दिन दूर नहीं है, जब ये गद्दार राजनेता इस देश की सामान्य जनता के हाथों शिकार हो जायेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. श्री सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ0 411
2. ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम कथा, पृ0 65
3. ज्ञान चतुर्वेदी, जो घर फूँके, पृ0 39
4. ज्ञान चतुर्वेदी, मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ, पृ0 73
5. ज्ञान चतुर्वेदी, जो घर फूँके, पृ0 39
6. ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ0 104
7. ज्ञान चतुर्वेदी, खामोश! नंगे हमाम में हैं, पृ0 101
8. ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ0 34
9. ज्ञान चतुर्वेदी, जो घर फूँके, पृ0 91
10. ज्ञान चतुर्वेदी, मरीचिका, पृ0 62
11. ज्ञान चतुर्वेदी, खामोश! नंगे हमाम में हैं, पृ0 49